

तंजावुर: एक समग्र विश्लेषण

पहला खंड: कावेरी के डेल्टा में इतिहास का उदय।

तंजावुर, जिसे तमिलनाडु का सांस्कृतिक हृदय और 'चावल का कटोरा' कहा जाता है, कावेरी नदी के उपजाऊ डेल्टा में स्थित एक ऐसा ऐतिहासिक नगर है जहाँ चोल साम्राज्य का गौरव आज भी जीवंत है। यह शहर केवल ईंट और पत्थर की इमारतों का समूह नहीं, बल्कि यह कला, संगीत, नृत्य और स्थापत्य के उस स्वर्ण युग का एक जीवंत संग्रहालय है जिसने दक्षिण भारत की सभ्यता को परिभाषित किया। इसकी कहानी कावेरी नदी के जल से उतनी ही सिंचित है जितनी कि शक्तिशाली सम्राटों के सपनों से। इस क्षेत्र की उपजाऊ भूमि ने इसे सदियों से कृषि और समृद्धि का केंद्र बनाए रखा, जिसने एक स्थिर और संपन्न समाज को जन्म दिया, जहाँ कला और संस्कृति फल-फूल सकी। हालांकि इसका इतिहास बहुत प्राचीन है, लेकिन तंजावुर की पहचान का सबसे गौरवशाली अध्याय महान चोल राजवंश के साथ शुरू होता है, जिन्होंने इसे अपनी भव्य राजधानी के रूप में चुना।

नौवीं शताब्दी में, जब चोलों ने पल्लवों और पांड्यों को पराजित कर अपनी शक्ति का पुनरुत्थान किया, तो उन्होंने तंजावुर को अपने बढ़ते हुए साम्राज्य के केंद्र के रूप में स्थापित किया। लेकिन इस शहर को इसकी अमर पहचान महानतम चोल सम्राट राजराज चोल प्रथम (९८५-१०१४ ईस्वी) ने प्रदान की। राजराज चोल न केवल एक अजेय योद्धा थे, जिन्होंने एक विशाल और शक्तिशाली समुद्री साम्राज्य की स्थापना की जो श्रीलंका से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैला हुआ था, बल्कि वे कला और स्थापत्य के एक महान पारखी और संरक्षक भी थे। उन्होंने तंजावुर को अपने साम्राज्य की एक ऐसी भव्य राजधानी के रूप में विकसित किया जो उनकी शक्ति, भक्ति और दूरदर्शिता का प्रतीक बन सके। उनके शासनकाल में, तंजावुर न केवल एक राजनीतिक और सैन्य केंद्र था, बल्कि यह व्यापार, वाणिज्य और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी बन गया था, जहाँ दूर-दूर के देशों से व्यापारी और कलाकार आते थे।

राजराज चोल की दृष्टि और भक्ति का ही परिणाम था कि उन्होंने तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर का निर्माण करवाया, जो आज भी चोल स्थापत्य कला की सर्वोच्च उपलब्धि माना जाता है। इस मंदिर का निर्माण केवल एक धार्मिक कार्य नहीं था, बल्कि यह सम्राट की शक्ति और उनके साम्राज्य के वैभव का एक उद्घोष भी था। यह मंदिर उस समय के समाज और अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु बन गया। मंदिर के पास विशाल भूमि थी, और इसकी आय से सैकड़ों पुजारियों, संगीतकारों, नर्तकियों और कारीगरों का भरण-पोषण होता था। इस प्रकार, तंजावुर का इतिहास चोलों के उत्थान और उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है।

चोल साम्राज्य के पतन के बाद भी, तंजावुर का सांस्कृतिक महत्व कम नहीं हुआ। इस पर पांड्यों, विजयनगर साम्राज्य के नायकों और अंत में मराठा शासकों ने भी शासन किया। प्रत्येक राजवंश ने शहर की सांस्कृतिक विरासत में अपना योगदान दिया। विशेष रूप से, सत्रहवीं शताब्दी में स्थापित तंजावुर के मराठा शासकों, जो छत्रपति शिवाजी महाराज के सौतेले भाई के वंशज थे, ने कला और साहित्य को बहुत संरक्षण दिया। उन्होंने प्रसिद्ध सरस्वती महाल पुस्तकालय का विस्तार किया और तंजावुर चित्रकला को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, तंजावुर का इतिहास विभिन्न संस्कृतियों के संगम की एक अनूठी गाथा है, जिसमें चोलों की भव्यता, नायकों की कलात्मकता और मराठों की विद्वता का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। यह शहर उस विरासत का प्रतीक है जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है।

दूसरा खंड: बृहदीश्वर मंदिर: स्थापत्य का शिखर और भक्ति का प्रतीक।

तंजावुर की पहचान का पर्याय बृहदीश्वर मंदिर है, जिसे स्थानीय लोग 'पेरुवुदैयार कोविल' या 'बड़ा मंदिर' कहते हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और इसे महान चोल सम्राट राजराज चोल प्रथम ने लगभग १०१० ईस्वी में बनवाया था। यह केवल एक पूजा स्थल नहीं, बल्कि यह द्रविड़ स्थापत्य कला, इंजीनियरिंग और मूर्तिकला का एक ऐसा चमत्कार है जो आज भी दुनिया भर के वास्तुकारों और इतिहासकारों को चकित कर देता है। पूरी तरह से ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है और इसे 'महान जीवंत चोल मंदिरों' में से एक माना जाता है, क्योंकि यहाँ पिछले एक हजार वर्षों से निरंतर पूजा-अर्चना हो रही है। इस मंदिर की भव्यता और इसका विशाल आकार इसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति को श्रद्धा और विस्मय से भर देता है।

मंदिर की सबसे प्रभावशाली विशेषता इसका विशाल 'विमान' यानी मुख्य गर्भगृह के ऊपर बना टॉवर है। यह विमान लगभग ६६ मीटर ऊँचा है और इसकी संरचना पिरामिड के आकार की है। यह पूरी तरह से एक-दूसरे पर टिके हुए पत्थरों से बना है, जिसमें किसी भी प्रकार के जोड़ने वाले पदार्थ का उपयोग नहीं किया गया है। इस विमान के शिखर पर स्थित 'कुंभम' नामक कलश एक ही विशाल ग्रेनाइट पत्थर से बना है, जिसका वजन लगभग ८० टन है। यह आज भी एक रहस्य है कि उस युग में बिना किसी आधुनिक मशीनरी के इतने भारी पत्थर को इतनी ऊँचाई पर कैसे पहुँचाया गया होगा। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार, इसके लिए मंदिर के पास से कई किलोमीटर लंबा एक ढलान वाला रैंप बनाया गया था, जिस पर हाथियों की मदद से इस पत्थर को ऊपर ले जाया गया। विमान की संरचना ऐसी है कि दोपहर के समय इसकी परछाई ज़मीन पर नहीं पड़ती, जो चोल वास्तुकारों के गहन ज्ञान का एक और प्रमाण है।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक विशाल नंदी (शिव का वाहन बैल) की अखंड मूर्ति है, जो एक ही पत्थर को तराश कर बनाई गई है। यह भारत की सबसे बड़ी नंदी प्रतिमाओं में से एक है। मंदिर परिसर की दीवारों, स्तंभों और छतों पर सुंदर नक्काशी और मूर्तियाँ हैं, जो हिंदू पौराणिक कथाओं के विभिन्न प्रसंगों को दर्शाती हैं। मंदिर की भीतरी दीवारों पर चोलकालीन भित्तिचित्र भी पाए गए हैं, जो अजंता की गुफाओं की कला की याद दिलाते हैं। इन चित्रों में भगवान शिव के विभिन्न रूपों और राजराज चोल के जीवन के दृश्यों को दर्शाया गया है। इसके अलावा, मंदिर की दीवारों पर भरतनाट्यम के १०८ करणों (नृत्य मुद्राओं) में से कई को उकेरा गया है, जो इस स्थान के कलात्मक महत्व को दर्शाता है।

बृहदीश्वर मंदिर केवल एक स्थापत्य का चमत्कार ही नहीं था, बल्कि यह चोल साम्राज्य का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र भी था। मंदिर के शिलालेखों से पता चलता है कि यह एक विशाल संगठन था, जिसके पास अपनी भूमि, कर्मचारी और खजाना था। मंदिर में सैकड़ों पुजारी, देवदासियाँ (जो नृत्य और संगीत के माध्यम से सेवा करती थीं), संगीतकार, माला बनाने वाले, रसोइये और प्रशासनिक अधिकारी कार्यरत थे। यह एक ऐसा स्थान था जहाँ कला और धर्म का संगम होता था, और यह पूरे समुदाय के जीवन को निर्देशित करता था। राजराज चोल ने इस मंदिर का निर्माण अपनी सैन्य विजयों के प्रति कृतज्ञता और भगवान शिव के प्रति अपनी गहरी भक्ति को व्यक्त करने के लिए किया था, और यह आज भी उनकी महानता और उनके युग के गौरव की कहानी कहता है।

तीसरा खंड: कला, संस्कृति और ज्ञान की त्रिवेणी।

तंजावुर की आत्मा केवल उसके मंदिरों में ही नहीं, बल्कि उसकी जीवंत कला, संगीत और ज्ञान की परंपराओं में भी बसती है। यह शहर दक्षिण भारत की शास्त्रीय कलाओं का एक महत्वपूर्ण उद्गम स्थल और संरक्षक रहा है। चोलों के बाद, तंजावुर के नायक और मराठा शासकों ने इन कलाओं को संरक्षण देना जारी रखा, जिससे यह एक अद्वितीय सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। यहाँ की सबसे प्रसिद्ध कलाओं में से एक 'तंजावुर चित्रकला' है। यह चित्रकला शैली अपनी जीवंतता, समृद्ध रंगों और सोने की पत्ती (गोल्ड फॉयल) के अनूठे प्रयोग के लिए जानी जाती है। इन चित्रों में हिंदू देवी-देवताओं, विशेष रूप से भगवान कृष्ण के बाल रूप, को दर्शाया जाता है। चित्र को एक लकड़ी के तख्ते पर बनाया जाता है और इसमें रत्नों और कांच के टुकड़ों को भी जड़ा जाता है, जिससे इसे एक त्रि-आयामी प्रभाव मिलता है। यह कला आज भी जीवित है और दुनिया भर के कला प्रेमियों द्वारा सराही जाती है।

तंजावुर को शास्त्रीय नृत्य 'भरतनाट्यम' का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में, तंजावुर के मराठा दरबार में 'तंजावुर चौकड़ी' के नाम से प्रसिद्ध चार भाइयों - चिन्नैया, पोन्नैया,

शिवानंदम और वडिवेलु - ने भरतनाट्यम के आधुनिक स्वरूप को व्यवस्थित और संहिताबद्ध किया। उन्होंने नृत्य के क्रम, संगीत और भावों को एक निश्चित प्रारूप प्रदान किया, जिसका पालन आज भी दुनिया भर के भरतनाट्यम नर्तक करते हैं। इसी प्रकार, कर्नाटक संगीत के विकास में भी तंजावुर और कावेरी डेल्टा क्षेत्र का योगदान अमूल्य है। महान संगीतकार त्यागराज, जो कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति में से एक हैं, इसी क्षेत्र के थे। इस भूमि ने अनगिनत संगीतकारों, वादकों और संगीत विद्वानों को जन्म दिया है, जिन्होंने इस संगीत परंपरा को समृद्ध किया है।

कला और संस्कृति के अलावा, तंजावुर ज्ञान और साहित्य के संरक्षण का भी एक महान केंद्र रहा है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण 'सरस्वती महाल पुस्तकालय' है, जो तंजावुर मराठा महल परिसर में स्थित है। यह दुनिया के सबसे पुराने और महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में से एक है। इसकी स्थापना नायक शासकों द्वारा की गई थी, लेकिन इसका सर्वाधिक विस्तार मराठा शासक सरफोजी द्वितीय के शासनकाल में हुआ, जो स्वयं एक महान विद्वान थे। इस पुस्तकालय में ताड़ के पत्तों पर लिखी गई हजारों पांडुलिपियाँ, प्राचीन ग्रंथ और कागज पर लिखे गए दस्तावेज संग्रहीत हैं। यहाँ संस्कृत, तमिल, तेलुगु, मराठी और कई अन्य भाषाओं में साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा और कला पर दुर्लभ ग्रंथ मौजूद हैं। यह पुस्तकालय ज्ञान का एक ऐसा अनमोल खजाना है जो हमें भारत की समृद्ध बौद्धिक परंपरा की एक झलक प्रदान करता है।

इन प्रमुख कलाओं के अतिरिक्त, तंजावुर कुछ अन्य अनूठी शिल्पकलाओं के लिए भी जाना जाता है। यहाँ के कारीगरों द्वारा बनाई जाने वाली 'तंजावुर तलैयट्टी बोम्मई' (सिर हिलाने वाली गुड़िया) बहुत प्रसिद्ध है। मिट्टी से बनी ये रंगीन गुड़ियाएँ इस प्रकार संतुलित होती हैं कि उनका सिर और शरीर हवा के हल्के झोंके से भी नृत्य करता हुआ प्रतीत होता है। इसके अलावा, चोल काल से ही यह क्षेत्र कांस्य मूर्तियों की ढलाई के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। कुल मिलाकर, तंजावुर कला, संगीत, नृत्य, साहित्य और शिल्प का एक ऐसा संगम है, जो इसे तमिलनाडु और पूरे भारत का एक अनमोल सांस्कृतिक रत्न बनाता है।

चौथा खंड: आधुनिक तंजावुर: विरासत का वाहक।

आधुनिक तंजावुर एक ऐसा शहर है जो अपनी गौरवशाली विरासत की छाँव में जीता और साँस लेता है। यह एक हलचल भरा जिला मुख्यालय है, लेकिन इसकी गति और लय आज भी इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चरित्र द्वारा निर्धारित होती है। शहर का जीवन बृहदीश्वर मंदिर के चारों ओर केंद्रित है, जो न केवल एक पर्यटन स्थल है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए एक सक्रिय पूजा स्थल और सामाजिक केंद्र भी है। सुबह और शाम, मंदिर का परिसर भक्तों, पर्यटकों और स्थानीय निवासियों से भर जाता है, जो यहाँ शांति और आध्यात्मिकता का अनुभव करने आते हैं। पुराने शहर की संकरी गलियों में

घूमते हुए, पारंपरिक घर, छोटे मंदिर और कारीगरों की दुकानें दिखाई देती हैं, जो हमें समय में पीछे ले जाती हैं।

आधुनिक तंजावुर की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से दो स्तंभों पर टिकी हुई है: कृषि और पर्यटन। कावेरी डेल्टा में स्थित होने के कारण, यह क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ है और यहाँ बड़े पैमाने पर धान की खेती होती है, जिसके कारण इसे 'तमिलनाडु का चावल का कटोरा' कहा जाता है। कृषि आज भी यहाँ के अधिकांश लोगों के जीवन का आधार है। दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ पर्यटन है, जो शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपत्ति पर आधारित है। बृहदीश्वर मंदिर, मराठा महल, सरस्वती महाल पुस्तकालय और यहाँ की अनूठी कलाएँ दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। पर्यटन ने होटल, रेस्तरां और हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा दिया है, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

इस अमूल्य विरासत का संरक्षण आधुनिक तंजावुर के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी और चुनौती दोनों है। बृहदीश्वर जैसे पत्थर के स्मारकों को तो समय की मार से बचाया जा सकता है, लेकिन तंजावुर चित्रकला, भरतनाट्यम और कर्नाटक संगीत जैसी जीवंत कलाओं को जीवित रखने के लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। यह कार्य गुरुओं, कलाकारों और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है, जो इन परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए समर्पित हैं। सरस्वती महाल पुस्तकालय में संग्रहीत हजारों पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण और संरक्षण भी एक महत्वपूर्ण कार्य है ताकि इस ज्ञान के खजाने को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

अंत में, तंजावुर की विशिष्टता इस बात में निहित है कि यहाँ अतीत केवल एक भूली-बिसरी याद नहीं है, बल्कि यह वर्तमान जीवन का एक अभिन्न अंग है। हम्पी की तरह यह एक मृत शहर का खंडहर नहीं है, बल्कि एक जीवंत शहर है जहाँ एक हजार साल पुराना मंदिर आज भी लोगों की आस्था का केंद्र है, जहाँ सदियों पुरानी चित्रकला आज भी घरों में बनाई जाती है, और जहाँ शास्त्रीय संगीत और नृत्य की परंपरा आज भी गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से जीवित है। तंजावुर भारत की उस सांस्कृतिक निरंतरता का एक शक्तिशाली प्रतीक है जो आक्रमणों और परिवर्तनों के बावजूद अपनी जड़ों से जुड़ी रही। यह एक ऐसा शहर है जो हमें अपनी विरासत पर गर्व करना सिखाता है और यह याद दिलाता है कि सच्ची समृद्धि केवल आर्थिक विकास में नहीं, बल्कि अपनी कला और संस्कृति को सहेजने में भी है।